egkRek xka/kh vUrjjk"Vªh; fgUnh fo'ofo|ky;] o/kk ¼egkjk"Vª½
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अन्तर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
Mahatama Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha
(A Central University Established by Parliament by Act No.3 of 1997)

स्थापना दिवस पर गोष्ठी

क्षेत्रीय केंद्र, इलाहाबाद

'अंधेरे में' हिंदी कविता में विलक्षण शुरूआत : प्रो. गोपेश्वर सिंह

मुक्तिबोध की कविता **'अंधेरे में'** जगत समीक्षा है। यह बेचैन कर देने वाली कविता है। हिंदी कविता में इससे एक विलक्षण शुरूआत होती है। मुक्तिबोध के समय स्याह और सफेद का माहौल काफी साफ था। शीतयुद्ध के समय परिवर्तनकामी शक्तियों की पहचान की जा सकती थी, आज का दौर वैसा नहीं है। परम अभिव्यक्ति के खतरे आज और ज्यादा हैं। मुक्तिबोध अपनी बहुचर्चित कविता 'अंधेरे में' में गांधी, तिलक, तालस्टाय को याद करते हैं, मुझे ऐसा लगता है कि मुक्तिबोध विचारधारा का अतिक्रमण करते हैं। उक्त बातें महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के 17वें स्थापना दिवस के अवसर पर क्षेत्रीय केंद्र इलाहाबाद के सत्यप्रकाश मिश्र सभागार में **'मुक्तिबोध और हिंदी कविता के पचास बरस'** विषय पर आयोजित गोष्ठी में मुख्य वक्ता हिंदी के वरिष्ठ आलोचक प्रो. गोपेश्वर सिंह ने कहीं।

कार्यक्रम के आरम्भ में क्षेत्रीय केंद्र, इलाहाबाद के प्रभारी प्रोफेसर संतोष भदौरिया ने स्वागत वक्तव्य में कहा कि महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय ने अपनी अल्प अवधि में अनेक उपलब्धियां हासिल की है।

{k=h; dsUnz
24/28–सरोजनी नायडू मार्ग, सिविल लाइन्स, इलाहाबाद–211001, उ.प्र., भारत
फोन– 0532–2420700, फैक्स : 0532–2424442, मो. 8004926360 ईमेलः mgahvalld@gmail.com वेबसाइट : hindivishwa.org

ज्ञान और हिंदी भाषा को विस्तारित किया है। इलाहाबाद केंद्र में वर्तमान कुलपति महोदय की अगुवाई में नए पाठ्यक्रमों एवं शोध कार्य के साथ भोजपुरी-हिंदी-अंग्रेजी शब्दकोश परियोजना की शुरूआत हुई है। आप सब के सहयोग से यह कार्य आगे बढ़ेगा। उन्होंने केंद्र को मिले अपार सहयोग के लिए सभी साहित्य प्रेमियों एवं सुधीजनों का आभार व्यक्त किया और स्वागत किया।

गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए भारत भारती पुरस्कार से सम्मानित वरिष्ठ कथाकार एवं आलोचक श्री दूधनाथ सिंह ने कहा कि मुक्तिबोध संघर्ष में मुक्ति का रास्ता देखते हैं। उनके पूर्व ऐसी कविता लिखने की कोई परम्परा दिखाई नहीं देती है। वर्गों को समझने, मिलकर चलने और आंदोलनधर्मी होने में ही मुक्तिबोध अपनी रचना की सार्थकता देखते हैं। वे कविता में व्यंग्यात्मक धार को बनाए रखने वाले कवि हैं। 'अंधेरे में' और 'पक्षी

और दीमक' कहानी के माध्यम से उन्होंने मुक्तिबोध की रचना प्रक्रिया को व्याख्यायित किया। उन्होंने कहा कि मुक्तिबोध कथा के भीतर कथा रचते हैं।आज आमजन मिथ्या चेतना का शिकार है। उससे मुक्ति की आवश्यकता है। मुक्तिबोध वर्ग की समझ को अद्यतन करने का काम करते हैं। उनका मानना था कि वर्गों के भीतर भी वर्ग होते हैं। वर्ग की अवधारणा को नए सिरे से देखने और परिभाषित करने की कोशिश मुक्तिबोध ने की। उन्होंने कहा कि हिंदी कविता में विरले लोग हैं जो मुक्तिबोध की परम्परा को अभिव्यक्त कर रहे हैं, संघर्ष के लिए अपने को तैयार कर रहे हैं, संघर्षरत रह कर शक्ति को एकजुट कर रहे हैं।

विशिष्ट अतिथि वरिष्ठ आलोचक प्रो. राजेन्द्र कुमार ने अपने वक्तव्य में कहा कि मुक्तिबोध आत्मसंघर्ष के कवि हैं। हिंदी आलोचना को सर्वाधिक पारिभाषिक शब्द मुक्तिबोध ने दिए। आज कविता में आत्मसंघर्ष की जगह आत्मचर्चा ज्यादा है। उनके यहां अंधेरा ही सत्य दिखाता है। आलोचकों ने मुक्तिबोध को और अधिक दुरूह बनाया है। आज कविता में अन्त:करण का आयतन सिकुड़ा है। समकालीन जनमत के संपादक रामजी राय ने कहा कि मुक्तिबोध अविभाजित व्यक्तित्व के कवि नहीं हैं। आत्म संघर्ष से उनकी कविता उपजती है। और न ही वे अस्मिता की तलाश के रचनाकार हैं। अपनी कविता **'अंधेरे में'** वे नए भारत की खोज करते हैं। वैचारिक और अनुभव के स्तर पर वे नेहरू के प्रतिपक्ष में खड़े होने वाले कवि हैं। उनकी कविताओं के संदर्भ में पठनीयता के संकट या कठिनता की बात करना बेमानी है। उनकी कविता मुहावरा बनती है। उनकी रचनाओं में वर्ग, देश, काल, समाज और संस्कृति एक साथ मौजूद रहते हैं। मुक्तिबोध अपनी कविता में कबीर को जीना चहते हैं। वे नए सहचर खोजने की बात करते हैं। वे कहते हैं कि सत्य को लड़ाकू होना चाहिए। आज की कविता निवेदन सौंदर्य की कविता है जो बहुत काम की नहीं है। मुक्तिबोध के यहां सत्ता केंद्र में है। उनकी कविता सांस्कृतिक, राजनीतिक इतिहास लिख दिए जाने की कविता है। उन्होंने आलोचना के नए औजार विकसित किए। कविता का सौंदर्यबोध बदला।

अतिथियों का स्वागत डॉ. विधु खरे दास, डॉ. सपना सिंह, डॉ. अनुपमा राय ने किया। स्थापना दिवस पर आयोजित गोष्ठी में बड़ी संख्या में लेखकों, सुधीजनों, संस्कृत कर्मियों एवं छात्र/छात्राओं की भागीदारी रही जिनमें प्रमुख रूप से श्रीप्रकाश मिश्र, ए.ए. फातमी, हरिश्चन्द्र पाण्डेय, असरार गांधी, रविकिरन जैन, डॉ. अर्जुन तिवारी, सुर्यदेव पाठक 'पराग', फखरूल करीम, सुरेश कुमार शेष, सुरेन्द्र राही, संतोष चतुर्वेदी, रामचन्द्र, सूर्यनाराण, ओ.डी. सिंह, अशरफ अली बेग, हिमांशुरंजन, सुधीर सुमन, मृत्युंजय, सालेहा जर्रीन, रेनू सिंह, मलखान सिंह, रामनरेश, हीरालाल, राजन, दिनेश, शाहनवाज आलम समेत तमाम लोगों ने शिरकत की।

प्रस्तुति
क्षेत्रीय केंद्र, इलाहाबाद